



**प. पू. आचार्यदेव श्रीमद्विजय
लब्धिवन्दरसूरीधरजी म.सा.**

गुरु लब्धि की वाणी से,
अमृत का झरना झरता था।
गुरु लब्धि के दर्शन से,
पुण्य-प्रसून खिलता था।

गुरु लब्धि में बसती थी,
अखूट ऋद्धि-सिद्धि-
गुरु लब्धि के दर्शन से,
आनंद-मंगल मिलता था।



गुरु वंदना

**विध्वपूज्य, प्रातः स्मरणीय, अभिधान
राजेन्द्रकोषनिर्माता, कलिकाल कल्पतरु
प. पू. आचार्यदेव श्रीमद्विजय
राजेन्द्रसूरीधरजी म.सा.**

अजेय थे जो इन्द्रियों से,
ज्ञान से समृद्ध थे,
जगवंध योगीराज जिनके,
कार्य भी सुविशुद्ध थे।

सद्ज्ञान की थी शुभ्रज्योत्सना
अमर जिनका नाम है,
ऐसे गुरु राजेन्द्र को
नित जयन्तसेन प्रणाम है।



**सुविशाल गच्छाधिपति पुण्यसम्राट्
प.पू. आचार्यदेव श्रीमद्विजय
जयन्तसेनसूरीधरजी म.सा.**

समर्थगच्छसूरये,
जिनेशभक्तिवार्धये।
नमो नमोऽस्तु ते गुरो!
जयन्तसेनसूरिणे॥

यतीन्द्रहार्दधारिणे,
सुसङ्गतमिहारिणे।
नमो नमोऽस्तु ते गुरो!
जयन्तसेनसूरिणे॥

